परंपरागत फसलों की खेती की तुलना में औषधीय पौधों की खेती से एक हेक्टेयर में किसानों को ज्यादा आमदनी होती है

परंपरागत खेती का विकल्प बनी औषधीय फसलों की खेती अच्छे मुनाफे से किसानों का रूझान बढ़ा

देश में कोरोना की दूसरी लहर में लाखों लोगों ने आयुर्वेद की औषधियों का सेवन करके स्वास्थ्य में लाभ पाया। आयुर्वेद विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति है और इसमें औषधीय पौधों का उपयोग किया जाता है। कोरोना काल के समय देश-दुनिया में औषधीय पौधों की मांग में बहुत अच्छी बढ़ोत्तरी हुई है और औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों ने अच्छा लाभ कमाया है। देश की कई नामी कंपनियां के आयुर्वेद उत्पाद विश्वभर में प्रसिद्ध है और सालभर उनकी मांग बनी रहती है। ट्रैक्टर जंक्शन की इस पोस्ट में किसान भाइयों को 5 महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की जानकारी दी जा रही है। किसान भाई अपने क्षेत्र की जलवायु, मौसम और भूमि के आधार पर इनकी खेती कर सकते हैं। कई राज्यों में सरकार की ओर से सब्सिडी और अनुदान भी दिया जाता है।

भारत में पारंपरिक फसलें बनाम औषधीय फसलें

भारत के अधिकांश किसान पारंपरिक फसलों के उत्पादन से जुड़े हुए हैं और अपने खेतों में गेहूं, चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, गन्ना,कपाल, सरसों, मूंगफली आदि की बुवाई करते हैं। जबकि औषधीय फसलों में सर्पगन्धा, अश्वगंधा, ब्राम्ही, कालमेघ, कौंच, सतावरी, तुलसी, एलोवेरा, वच, आर्टीमीशिया,लेमनग्रास, अकरकरा, सहजन प्रमुख है। परंपरागत फसलों की खेती की तुलना में औषधीय पौधों की खेती से एक हेक्टेयर में किसानों को ज्यादा आमदनी होती है।

खेती के लिए जरूरी है फसल विविधता : खेत में कई सालों तक एक ही तरह की फसल उगाने से पैदावार क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे में खेत में फसल विविधता के लिए औषधीय खेती करने की सलाह कृषि वैज्ञानिकों की तरफ से दी जाती है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि खेत की एक ही तरह की फसल लेने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है। ऐसे में किसानों को फसल विविधता के लिए सलाह दी जाती है। फसल विविधता के इस क्रम में अगर गेहूं और धान के खेतों को खाली होने के बाद अगर किसान उसमें औषधीय पौधों की खेती करेंगे तो यह उनके लिए बहुत लाभकारी होगा। अगली बार जब वह उसमें धान और गेहूं उगाएंगे तो उसकी पैदावार अधिक होगी।

अकरकरा की खेती: अकरकरा की खेती औषधीय पौधे के रूप में की जाती है। इसके पौधे की जड़ों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवा बनाने में किया जाता है। इसके बीज और डंठल की मांग बनी रहती है। इसका उपयोग दंतमंजन बनाने से लेकर दर्द निवारक दवाओं और तेल के निर्माण में होता है। अकरकरा की खेती कम मेहनत और अधिक लाभ देने वाली पैदावार हैं। अकरकरा की खेती 6 से 8 महीने की होती है। इसके पौधों को विकास करने के लिए समशीतोष्ण जलवायु की जरूरत होती है। भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से मध्य भारत के राज्यों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा और महाराष्ट्र में होती।

अश्वगंधा की खेती : यह एक झाड़ीदार पौधा होता है। इसकी जड़ से अश्व जैसी गंध आती है, इसलिए इसे अश्वगंधा कहते हैं। यह अन्य सभी जड़ी-बूटियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इसके उपयोग तनाव और चिंता को दूर करने में किया जाता है। इसकी जड़, पत्ती, फल और बीज औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। किसानों के लिए अश्वगंधा की खेती बहुत लाभकारी है। किसान इसकी खेती से कई गुना अधिक कमाई कर सकते हैं, इसलिए इसे कैश कॉर्प भी कहा जाता है।

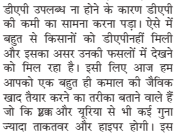

होगी रिकाड़तोड़ पैदावार, फ्री में ऐसे तैयार करें यूरिया और डीएपी से कई गुना ताकतवर खाद+हाईपावर

आजकल खेती में सभी किसान डीएपी और यूरिया का काफी ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन किसान भाइयों को इस साल डीएपी उपलब्ध ना होने के कारण डीएपी की कमी का सामना करना पड़ा। ऐसे में बहुत से किसानों को डीएपीनहीं मिली और इसका असर उनकी फसलों में देखने को मिल रहा है। इसी लिए आज हम आपको एक बहुत ही कमाल की जैविक खाद तैयार करने का तरीका बताने वाले हैं जो कि ध्क्क और यूरिया से भी कई गुना ज्यादा ताकतवर और हाइपर होगी। इस खाद को सभी फसलों में इस्तेमाल किया जा सकता है और रिकार्ड तोड़ पैदावार ली जा सकती है। सबसे खास बात है कि किसान इसे बिलकुल फ्री में तैयार कर सकते हैं।

साथ ही इससे फसल को कोई भी नुकसान भी नहीं होता। ये हाईपॉवर एमिनो एसिड, फ्लोरिक एसिड और ह्यूमिक एसिड, इन तीनो जितना पावरफुल है। किसान भाइयों आपके घर में कंडे यानि गोबर के उपले जरूर होंगे। इन्ही उपलों से आप इस खाद+हाईपॉवर को तैयार कर सकते हैं और वो भी बिलकुल फ्री में।

इसे तैयार करने के लिए आपको कम से कम 6 महीने पुराना गोबर का उपला लेना है। क्योकि 6 महीने में इसके अंदर से पूरी गैस निकल जाती है। इस गोबर के उपले को आपको 5 लीटर पानी में 15 से 20 दिन के लिए डुबो कर रख देना है। 20 दिन बाद आपको इस पानी को निकाल लेना है।

ये आपका हाईपॉवर तैयार हो चुका है और आप इसको फसलों पर इस्तेमाल कर सकते हैं। किसी भी फसल के ऊपर इसका इस्तेमाल करने से फसल की ग्रोथ बहुत अच्छी होगी और सभी फसलें रिकार्डतोड़ पैदावार देंगी।

क्या है नीम लेपित यूरिया

यूरिया के ऊपर नीम के तेल का लेप कर दिया जाता है। यूरिया के ऊपर नीम का लेप नाइट्रीफिकेशन अवरोधी के रूप में कार्य करता है। नीम लेपित यूरिया धीमी गति से प्रसारित होता है, जिसके कारण फसलों की आवश्यकता के अनुरूप नत्रजन पोषक तत्व की उपलब्धता होती है एवं फसल उत्पादन में वृद्धि होती है। नीम लेपित यूरिया सामान्य यूरिया की तुलना में लगभग 10 त्नप्रतिशत कम लगता है, जिससे 10त्न प्रतिशत यूरिया की बचत की जा सकती है।

नत्रजन की क्षति को रोकना: फसलों द्वारा भूमि से लिये जाने वाले प्राथमिक मुख्य पोषक तत्वों यथा नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश में से नत्रजन का सर्वाधिक अवशोषण होता है, क्योंकि पौधों को इस तत्व की सबसे अधिक आवश्यकता प?ती है। नत्रजन का मुख्य स्त्रोत यूरिया है। सामान्य यूरिया की नत्रजन क्षमता40त्न-50त्न प्रतिशत है तथा अवशेष नत्रजन 50त्न-50त्न प्रतिशत की वाष्पीकरण, लीचिंग या डिनाइट्रीफिकेशन के कारण क्षति हो जाती है। युक्ति संगत तकनीकी विधि एवं नीम लेपित यूरिया का प्रयोग करके इस क्षति को कम किया जा सकता है।

स्टीविया एक औषधीय फसल,जिसका मधुमेह के उपचार में महत्वपूर्ण स्थान

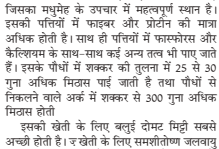

स्टीविया की खेती: शक्कर से 30 गुना मीठा होता है पौधा, मिलती है अच्छी कीमत स्टीविया एक औषधीय फसल है। यह एक ऐसा पौधा होता है, जिसका मधुमेह के उपचार में महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी पत्तियों में फाइबर और प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है। साथ ही पत्तियों में फास्फोरस और कैल्शियम के साथ-साथ कई अन्य तत्व भी पाए जाते हैं। इसके पौधों में शक्कर की तुलना में 25 से 30 गुना अधिक मिठास पाई जाती है तथा पौधों से निकलने वाले अर्क में शक्कर से 300 गुना अधिक मिठास होती

इसकी खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है। ज़ खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। बुवाई जून और दिसंबर के महीने को छोड़कर दसों महीने कर सकते

ज़ एक बार लगाने के बाद 5 सालों तक इससे फसल ले सकते हैं। ज़ इसकी कटाई साल में 4 से 5 बार की जा सकती है। रोपाई कलमों के द्वारा की जाती है। इसके लिए 15 सेंटीमीटर लंबी कलम को काटकर पॉलिथीन की थैलियों में तैयार कर लिया जाता है। इसे पूरे वर्ष सिंचाई की आवश्यकता होती है, इसलिए आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहना चाहिए। रोपाई के लगभग 4 महीने बाद इसकी पहली कटाई शुरू हो जाती है। आपको बता दें, स्टीविया के पत्ते भी बेचे जाते हैं, वहीं इसका पाउडर बनाकर भी बेचा जाता है। बाजार में इसकी मांग बहुत तेजी से बढ़ रही है। इसकी पत्तियों की कीमत करीब 400 से रूपये 500 प्रति किलो होती है।

कभी मजाक उड़ाते थे, आज मुरीद हैं लोग... मिलिये बिहार के बनाना मैन से, केला की जैविक खेती के लिए फेमस

आज कृषि में नवाचारों को प्रेरित किया जा रहा है। ये सिर्फ किसानों का काम नहीं रहा, बल्कि लोगों के लिए रोजगार का नया साधन बनता जा रहा है। अभी तक तो सिर्फ बेरोजगार लोगों के ही खेती-किसानी से जुड़ने और यहां बेहतर प्रदर्शन करने की खबरें सुर्खियों में रहती थीं, लेकिन 'बिहार के बनाना मैन' के नाम से मशहूर रामेश्वर सिंह ने पैट्रेलियम विभाग की नौकरी को छोड़कर कृषि के क्षेत्र में कदम रखा। इस समय बिहार में छट का पर्व चल रहा है। दीवाली से अभी तक रामेश्वर सिंह ने जैविक केला की एक बड़ी खेप 2.5 लाख तक में बेची है, जिसके चलते वो दोबारा सुर्खियों में बने हुये हैं। बेशक आज रामेश्वर सिंह को केला की जैविक खेती के लिए खूब नाम और पैसा मिला हो, लेकिन संघर्ष से सफलता का ये सफर शुरुआत से ही काफी मुश्किल था।

पहले मजाक उड़ाते थे, आज मुरीद हैं लोग

बिहार के बनियारपुर प्रखंड के हरपुर कराह के रहने वाले रामेश्वर सिंह कभी पैट्रोलियम विभाग में अच्छी खासी तनख्वाह पा रहे थे। तभी उन्होंने खेती करने का मन बनाया, लेकिन जब नौकरी छोड़कर अपने गांव पहुंचे तो लोगों ने कभी ताने मारे, तो कभी खूब मजाक उड़ाया। शहर छोड़कर गांव लौटने पर रामेश्वर सिंह का खूब उपहास हुआ, लेकिन हार माने बिना ही वो जिस काम के लिए आये थे, उसी में जुट गये। शुरुआत में केला की पारंपरिक खेती शुरू कर दी, लेकिन जब अच्छे परिणाम नहीं मिले तो केला की जैविक खेती पर जोर दिया।

सफल हुई केला की जैविक खेती

पारंपरिक खेती में नुकसान देखने के बाद रामेश्वर सिंह ने केला की जैविक खेती का ट्राइल शुरू किया। ट्राइल के परिणाम काफी अच्छे रहे और केला का भी क्वालिटी उत्पादन मिलने लगे। फिर क्या बाजार में बढ़ती जैविक केला की मांग को देखते हुये। इसी ट्राइल को अपना सफर बना लिया।